अध्याय

05

उत्साह अट नहीं रही है

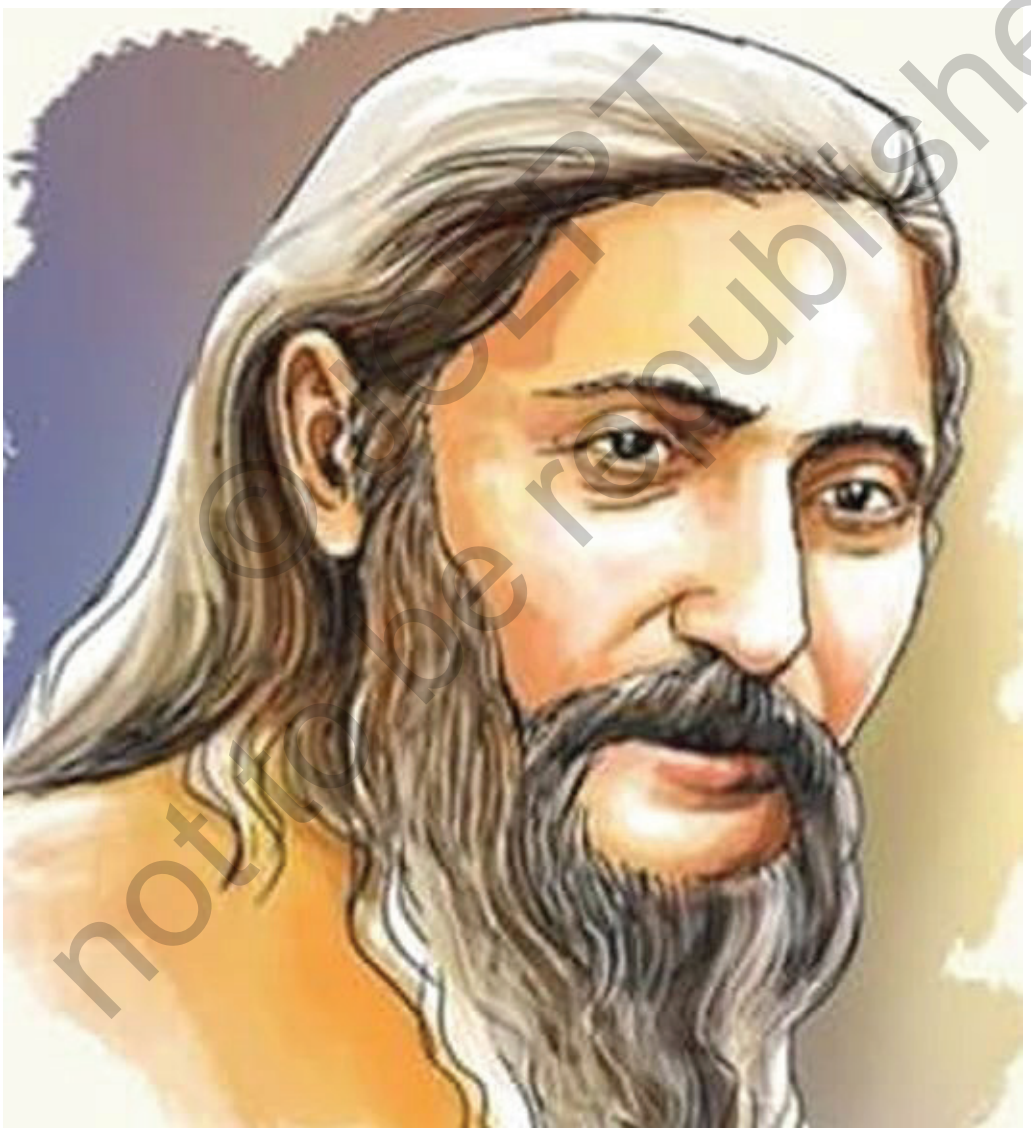

© NCERT not to be republished

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

कवि –परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

जन्म– 1899 ई.
जन्म– स्थान – महिषादल, जिला मेदिनीपुर, (बंगाल)
पैतृक गांव – गढ़ाकोला, जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश)

मृत्यु–1961 ई.

शिक्षा– 9वीं कक्षा तक

स्वाध्याय के बल पर संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी,संगीत और दर्शनशास्त्र का अध्ययन।

निराला का पारिवारिक जीवन अत्यंत दु:ख और संघर्षों से भरा हुआ था।

प्रमुख काव्य–रचनाएँ – अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नए पत्ते।

संपूर्ण रचनाएँ 'निराला रचनावली' नामक पुस्तक में संकलित है जो आठ– भागों में प्रकाशित है।

भाषा– शैली – कविताओं में तत्सम्– प्रधान खड़ी–बोली हिंदी भाषा का प्रयोग।

छंद – मुक्त छंद की कविता लेखन।
उत्साह

© JCERT not to be republished

पाठ – परिचय:-

1 .उत्साह

2. यह कविता क्रांतिकारी विचारधारा से परिपूर्ण है।
3. इस कविता में कवि निराला जी ने बादल को संबोधित करते हुए गरज- गरज कर बरसने का आह्वान किया है।
4. इस कविता में एक ओर गर्मी (धूप) से जलती हुई प्यासी- धरती की प्यास बुझाने के लिए बादल से बरसने का आग्रह किया गया है।
5. दूसरी तरफ इस कविता में नए जीवन की आश, नई कल्पना,नये अंकुर के लिए बादल से विध्वंस, विप्लव और क्रांति करने के लिए आकाश को चारों तरफ से घेर कर घनघोर वर्षा करने का आह्वान किया गया है।
6. यह कविता सामाजिक क्रांति की भावना से परिपूर्ण है।
7. निराला जी इसे नव- जीवन, नयी- कविता और नये साहित्यिक -सृजन के रूप में देखते हैं।

सप्रसंग व्याख्या:-

काव्यांश –1

बादल गरजो!

घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!

ललित ललित, काले घुँघराले,

बाल कल्पना के- से पाले,

विद्युत छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो -

बादल, गरजो।

शब्दार्थ:-

गगन -	आकाश,
धाराधर -	बादल।
ललित -	सुंदर,
विद्युत -	बिजली,
उर -	हृदय,
नूतन -	नया।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग- 2 में संकलित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'उत्साह' से ली गई है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने नवजीवन और नये- साहित्य सृजन के लिए क्रांति का प्रतीक बादल से बार-बार गरजने और बरसने का आह्वान किया है।

व्याख्या :- कवि काले- काले घुँघराले बाल के समान सुंदर दिखने वाले बादल से आकाश को चारों ओर से घेर कर गरज- गरज कर बरसने का आह्वान कर रहा है। अपने हृदय

© JCERT not to be republished

में बिजली को छुपा कर रखने वाले बादल जब गरज- गरज कर बरसता है, तब सब कुछ तहस-नहस हो जाता है। कवि ऐसे विध्वंस- कारी बादल से नवजीवन के लिए तथा कवियों को नयी -नयी कविता रचने के लिए फिर से गरज- गरजकर बरसने का आह्वान कर रहा है।

विशेष:-

1. इस कविता में विध्वंस- कारी, क्रांतिकारी तथा नवजीवन प्रदान करने वाले बादल से बार-बार गरजने का आह्वान किया गया है।
2. तत्सम्- प्रधान खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता में जटिलता आ गई है।
3. घेर घेर घोर में अनुप्रास तथा ललित-ललित में पुनरुक्ति-प्रकाश अलंकार है।

काव्यांश- 2

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो -
बादल, गरजो।

शब्दार्थ :-

विकल -	व्याकुल,
उन्मन -	कहीं मन नहीं लगना, अनमनापन,
निदाघ -	गर्मी,
सकल -	सभी/सारे,
घन -	बादल,
तप्त धरा -	जलती हुई धरती,
शीतल -	ठंढ।

प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक क्षितिज भाग-2 में संकलित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'उत्साह' से ली गई है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि गर्मी से जलती हुई धरती को फिर से शीतल करने के लिए बादल से आग्रह कर रहा है।

व्याख्या :- कवि कहते हैं कि गर्मी के भयंकर ताप से संसार के सभी लोग व्याकुल और उन्मना-सा हो रहे हैं। अज्ञात दिशा से आए हुए आसमान के बादल से कवि इस भयंकर गर्मी से जलती हुई धरती को अपनी वर्षा जल से फिर से शीतल कर देने का आग्रह कर रहा है। कवि बादल को फिर से गरज-गरज कर बरसने का आह्वान कर रहे हैं।

विशेष:-

1. इस काव्यांश में गर्मी के ताप से जलते हुए संसार को अपनी वर्षा जल से शीतल करने के लिए कवि बादल से आग्रह कर रहा है।
2. तत्सम-प्रधान खड़ी बोली हिन्दी भाषा के प्रयोग से कविता में क्लिष्टता और जटिलता आ गई है।
3. विकल विकल में पुनरुक्ति-प्रकाश तथा आए अज्ञात में अनुप्रास अलंकार है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

उत्तर - कवि बादल को क्रांति के सूत्रधार के रूप में देखता है। बादलों का गरजना 'विद्रोह' का प्रतीक है। कवि ने बादलों के गरजने के माध्यम से कविता में एक नए विद्रोह का आह्वान किया है। इसलिए बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहा गया है।

प्रश्न 2. कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है?

उत्तर - कवि इस कविता के माध्यम से लोगों को क्रांति के लिए उत्साहित करना चाहते हैं। बादलों में संसार की ताप को मिटाने की अपार शक्ति और भीषण गति होती है। बादलों के गरजने से लोगों के मन में परिवर्तन आ जाता है तथा मन उत्साह से भर जाता है। इसलिए कविता का शीर्षक 'उत्साह' रखा गया है।

प्रश्न 3. कविता में बादल किन- किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर - इस कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत कर रहा है -

1. बादल जल बरसाने वाली शक्ति के रूप में है।
2. बादल गर्मी या धूप से जलती हुई धरती को शीतलता प्रदान करता है।
(ग) बादल धूप से पीड़ित और प्यासे लोगों की प्यास बुझाता है।
(घ) बादल शोषितों और पीड़ितों के मन में उत्साह भरता है तथा क्रांति लाने के लिए उत्साहित करता है।

प्रश्न 4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। 'उत्साह' कविता में ऐसे कौन- से शब्द हैं जिनमें नाद- सौंदर्य मौजूद है, छाँटकर लिखें।

उत्तर - उत्साह कविता में निम्नलिखित शब्दों में नाद- सौंदर्य मौजूद है-

1. घेर घेर घोर गगन धाराधर ओ!
2. ललित ललित, काले घुँघराले, बाल कल्पना के-से पाले,
3. विद्युत-छबि उर में,

रचना और अभिव्यक्ति:

जैसे बादल उमड़-घुमड़कर बारिश करते हैं वैसे ही कवि के अंतर्मन में भी भावों के बादल उमड़-घुमड़कर कविता के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे ही किसी प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपने उमड़ते भावों को कविता में उतारिए।

उत्तर - विद्यार्थी स्वयं करें।

© JCERT not to be republished

अट नहीं रही है

पाठ – परिचय:-

1. अट नहीं रही है।
2. इस कविता में फागुन के महीने में प्रकृति में व्याप्त सुंदरता का चित्रण हुआ है।
3. फागुन महीने की सुंदरता इतनी बढ़ गई है कि यह सुंदरता घर-घर में फैली हुई है।
4. पक्षियों के झुंड अपने सुंदर पंखों को फैलाकर स्वच्छ आकाश में उड़ने के लिए उत्साहित हो रहे रहे हैं।
5. फागुन के महीने में चारों तरफ पेड़-पौधों में हरियाली छा गई हैं। रंग-बिरंगे फूलों से पेड़ों की डालियाँ इस तरह से लद गई हैं जैसे किसी नें अपने हृदय पर सुंदर और सुगंधित फूलों की माला डाले हुए हैं।
6. रंग बिरंगे फूलों की खुशबू का हवा में मिलने से हवा में मादकता छा गई हैं।
7. चारों तरफ सुंदरता इतनी अधिक फैल हुई है कि यह सुंदरता इस धरती पर कहीं अट ही नहीं रही है।
8. फागुन के महीने की सुंदरता की ओर ऑखें इतनी आकर्षित हो गई है कि इन ऑखों को चाह कर भी हटाने पर इस सुंदरता की ओर से हट नहीं रही हैं।

सप्रसंग- व्याख्या:-

काव्यांश- 1

अट नहीं रही है

आभा फागुन की तन

सट नहीं रही है।

कहीं साँस लेते हो,

घर-घर भर देते हो,

उड़ने को नभ में तुम

पर-पर कर देते हो,

आँख हटाता हूँ तो

हट नहीं रही है।

शब्दार्थ-

आभा-	चमक,
तन -	शरीर,
नभ -	आकाश।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग-2 में संकलित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'अट नहीं रही है' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में कवि नें फागुन महीने की सुंदरता और चमक का चित्रण किया है।

© JCERT not to be republished

व्याख्या– कवि कहते हैं कि फागुन के महीने में प्राकृतिक-सुंदरता चारों तरफ फैली हुई है। फूलों की सुगंध से हवा सुगंधित हो गई है, जो घर- घर में फैली हुई है। पक्षियों का समूह अपनी सुंदर पंखों को फैलाकर स्वच्छ आकाश में उड़ने के लिए उत्साहित हो रही हैं। इस सुंदरता की ओर से ऑख को हटाने पर भी हट नहीं रही है।

विशेष–

1. इस काव्यांश में फागुन महीने की प्राकृतिक सुंदरता का चित्रण किया गया है।
2. काव्यांश में सरल और सहज खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता सुंदर और सर्वग्राह्य बन गई है।
3. घर -घर में पुनरुक्ति प्रकाश और पर-पर में यमक अलंकार है।
4. कविता में तुकांत होने के कारण यह गेयात्मक है।

काव्यांश- 2

पत्तों से लदी डाल

कहीं हरी, कहीं लाल,

कहीं पड़ी है उर में

मंद-गंध- पुष्प-माल,

पाट-पाट शोभा-श्री

पट नहीं रही है।

शब्दार्थ:-

उर -	हृदय या छाती,
मंद-गंध-पुष्प-माल-	सुगंधित फूलों की माला,
पाट-पाट -	जगह- जगह,
शोभा-श्री -	सुंदरता से भरा पूरा,

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग- 2 में संकलित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'अट नहीं रही है' से ली गई है। इन पंक्तियों में कवि ने फागुन के महीने में चारों तरफ फैली प्राकृतिक- सुंदरता का चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि फागुन के महीने में सभी पेड़- पौधे अपनी पुरानी पत्तियों को गिरा कर नयीं-नयीं लाल और हरे रंग की कोमल पत्तियों को जन्म देती हैं। चारों तरफ पेड़- पौधों में सुंदर और सुगंधित फूल इस तरह से खिले हुए होते हैं, जैसे किसी ने अपने गले में रंग-बिरंगे फूलों की माला डाले हुए हो। जगह- जगह पर प्रकृति की सुंदरता इतनी बढ़ गई है कि वह सुन्दरता इस धरती पर और लोगों की ऑखों में अट ही नहीं रही है।

विशेष:-

1. इन पंक्तियों में चारों ओर व्याप्त प्राकृतिक सुंदरता का सुंदर चित्रण किया गया है।
2. संस्कृतनिष्ट तत्सम शब्दावली से युक्त सामासिक पदों से युक्त खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से इस काव्यांश में जटिलता और क्लिष्टता आ गई है।
3. 'कहीं पड़ी है उर में मंद-गंध-पुष्प-माल' पंक्ति में मानवीकरण अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

© JCERT not to be republished

4. पाट-पाट में पुनरुक्ति- प्रकाश और शोभा - श्री में अनुप्रास अलंकार है।

5. पंक्तियों में तुकांत होने के कारण कविता गेयात्मक है।

प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है ? लिखिए।

उत्तर:- कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है कि छायावादी कवि अपने अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाते हैं -

अट नहीं रही है

आभा फागुन की तन

सट नहीं रही है।

कहीं साँस लेते हो,

घर- घर भर देते हुए हो,

उड़ने को नभ में तुम

पर- पर कर खोल देते हो,

आँख हटाता हूँ तो

हट नहीं रही है।

प्रश्न 2. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है ?

उत्तर - फागुन के महीने में प्राकृतिक-सुंदरता चरमोत्कर्ष पर होती है। चारों ओर हरे-भरे पेड़-पौधों में रंग-बिरंग के रस-युक्त सुगंधित फूल खिले होते हैं। फूलों का रस और सुगंध हवा में मिलकर वातावरण को सुगंधित एवं मादक बना देती है। प्रकृति की इस सुंदरता की ओर जब किसी की आँखे जाती हैं तो यह आँखें उस सुंदरता की ओर से हटाने पर भी हटती नहीं है। इसलिए कवि की आँख भी फागुन की सुंदरता से नहीं हट रही है।

प्रश्न 3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है ?

उत्तर - कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन विभिन्न रूपों में किया है। कवि कहते हैं कि फागुन की सुंदरता इतनी अधिक बढ़ गई है कि इस धरती पर कहीं अट ही नहीं रही है। फूलों की खुशबू हवा में इस तरह फैली हुई है कि यह खुशबूदार हवा घर-घर में यानि सभी जगहों पर फैल गई है। पक्षी- गण अपनी सुंदर पंखों को फैलाकर स्वच्छ और नीले आकाश में उड़ने के लिए उन्मत हैं। प्रकृति की इस सुंदरता की ओर से अपनी ऑख को हटाने पर भी नहीं हटती है।

जगह-जगह पर पेड़ों की डालियों पर लाल और हरे रंग की कोमल पत्ते निकल आए हैं ।

© JCERT not to be republished

पेड़ों की डालियों पर रंग-बिरंग के सुगंधित फूल इस तरह खिले हुए हैं, जैसे किसी ने अपने गले पर फूलों की माला डाले हुए हो। यह सुंदरता इतनी अधिक बढ़ गई है कि इस धरती पर कहीं अट ही नहीं रही।

प्रश्न 4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?

उत्तर - फागुन मास में प्रकृति की सुंदरता चारों तरफ बिखरी होती हैं। पेड़ - पौधों में नई-नई कोपलें निकल आती हैं। सभी पेड़-पौधों में रंग- बिरंग के फूल खिले होते हैं। फूलों में रस और सुगंध भरे होते हैं, जिसके कारण सारा वातावरण सुगंधित हो जाता है । विभिन्न तरह के पक्षी इस महीने में अपनी मधुर - मधुर आवाज से पूरे वातावरण को संगीतमय बना देती हैं। कोयल की मीठी-मीठी कूक-भरी आवाज पूरे वातावरण में संगीत का जादू बिखेर देती हैं। पेड़-पौधों में नए-नए मंजर और उन मंजरों में फल लगने लगते हैं। फागुन के महीने में प्रकृति में अलग ही तरह का आनंद और उल्लास का माहौल होता है। इस प्रकार के आनंद और उल्लास का माहौल बाकी अन्य ऋतुओं में देखने को नहीं मिलता है।

प्रश्न 5. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य- शिल्प की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर - इन दोनों कविताओं के आधार पर निराला जी के काव्य- शिल्प की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. निराला जी छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक हैं। छायावादी कवि प्रकृति के सुंदर चितेरे होते हैं।
2. दोनों कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण के रूप में सुंदर चित्रण किया गया है।
3. 'उत्साह' कविता में बादल को एक क्रांतिकारी के रूप में चित्रित किया गया है।
4. 'उत्साह' कविता में संस्कृत-निष्ठ तत्सम शब्दों और सामासिक- पदों से युक्त खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता जटिल और क्लिष्ट है।
5. 'अट नहीं रही है' कविता में सरल एवं सहज शब्दावली से युक्त है। खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता सरल, सहज एवं सर्वग्राह्य है।
6. इन दोनों कविताओं में तुकांत होने के कारण दोनों ही कविताएँ लयात्मक और संगीतात्मक हैं।
7. इन दोनों ही कविताओं में पुनरुक्ति-प्रकाश, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार का सुंदर प्रयोग किया गया है।

रचना और अभिव्यक्ति :-

प्रश्न 6. होली के आसपास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए।

उत्तर - होली का त्यौहार फागुन के महीने में आता है। फागुन के महीने में सभी पेड़-पौधों से पुराने पत्ते झड़ कर उनमें नए-नए पत्ते उग आते हैं। पेड़- पौधों में रंग-बिरंग के

© JCERT not to be republished

फूल खिलने लगते हैं। इन फूलों के रस तथा सुगंध हवा में मिलकर हवा को अत्यंत मादक बना देते है। आम के पेड़ों में नए-नए मंजर निकलने लगते हैं। कोयल अपनी मधुर-मधुर आवाज से सारे वातावरण को गुंजायमान करती हैं। वसंत -ऋतु में प्रकृति में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिलता है। फागुन के महीने में नर- नारी, बूढ़े-बच्चे सभी आपस में मिलकर होली खेलने लगते हैं। चारों ओर आनंद और उल्लास का माहौल छा जाता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि बादल में किसका स्वर सुनता है?

(a) रूदन (b) क्रांति

(c) वेदना (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) क्रांति

प्रश्न 2. किस महीने में चारों तरफ हरियाली छा जाती है?

(a) फागुन (b) माघ

(c) वैशाख (d) अषाढ़

उत्तर-(a) फागुन

प्रश्न 3. कवि के अनुसार किसे केश सुंदर काले और घुंघराले हैं?

(a) प्रेयसी के (b) बादल के

(c) धरती के (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) बादल के

प्रश्न 4. कविता में जल का बरसना किसका प्रतीक है?

(a) बारिश होना

(b) शांति और सुख की स्थापना

(c) प्यास बुझना

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) शांति और सुख की स्थापना

प्रश्न 5. 'तप्त धरा' का सांकेतिक अर्थ क्या है?

(a) गर्म धरती

(b) सूखी धरती

(c) दुखों से पीड़ित धरती

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) दुखों से पीड़ित धरा

प्रश्न 6. कवि ने 'निदाघ' अर्थात भीषण गर्मी से किसकी ओर इशारा किया है?

(a) अधिक गर्मी (b) सांसारिक कष्ट

(c) असफलता (d) इनमें से काई नहीं

उत्तर-(b) सांसारिक कष्ट

प्रश्न 7. फागुन मास में कैसी हवाएँ चल रही हैं?

(a) शुष्क (b) नमीयुक्त

(c) मादक (d) मंद—मंद

उत्तर-(c) मादक

प्रश्न 8. कवि ने बादलों का आह्वान करते हुए उनसे क्या करने का आग्रह किया है?

© JCERT not to be republished

(a) न बरसने का (b) बरसने का

(c) गरजने का (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) बरसने का

प्रश्न 9. बादल को कवि ने गरजने के लिए कहा है, जिससे कि वातावरण में–

(a) जोश और क्रांति फैल सके।

(b) गर्मी समाप्त हो सके।

(c) बच्च्चे डर जाएं।

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) जोश और क्रांति फैल सके।

प्रश्न 10. कविता में बादल किसका प्रतीक है?

(a) भावनाओं का (b) सुख का

(c) दुःख का (d) क्रांति का

उत्तर-() उ

प्रश्न 11. फागुन मास के कारण लोगों के चेहरे पर क्या है?

(a) मायूसी (b) डर

(c) दुःख (d) खुशी

उत्तर-(d) खुशी

प्रश्न 12. 'धाराधर' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(a) पृथ्वी (b) आकाश

(c) समुद्र (d) बादल

उत्तर-(d) बादल

प्रश्न 13. बादल अपनी गर्जन–तर्जन से किसे घेर लेता है?

(a) समुद्र को (b) पृथ्वी को

(c) आकाश को (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) आकाश को

प्रश्न 14. कविता 'अट नहीं रही है' में किस ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण किया गया है?

(a) ग्रीष्म ऋतु (b) वर्षा ऋतु

(c) शरद ऋतु (d) वसंत ऋतु

उत्तर-(d) वसंत ऋतु

प्रश्न 15. निराला किस वाद से जुड़े हुए कवि थे?

(a) छायावाद (b) प्रयोगवाद

(c) प्रगतिवाद (d) प्रगतिशीलतावाद

उत्तर-(a) छायावाद

प्रश्न 16. निराला का जन्म कब हुआ था?

(a) सन् 1887 में (b) सन 1885 में

(c) सन्1897 में (d) सन् 1903 में

उत्तर-(c) सन् 1897 में

प्रश्न 17. निराला जी ने इनमें से किस पत्रिका का संपादन किया?

(a) समन्वय

(b) मतवाला

(c) समन्वय और मतवाला दोनों

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) समन्वय और मतवाला दोनों

प्रश्न 18. निम्नलिखित में से कौन–सी काव्य रचना निराला जी की नहीं है?

(a) अनामिका (b) परिमल

(c) सरोज स्मृति (d) झरना

उत्तर-(d) झरना

© JCERT not to be republished